अध्यक्ष महोदय : कृपया प्रधान मंत्री के पद के प्रति भद्रता दिखाइए।

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय: कृपया अपने स्थान पर बैठिए, यह क्या है?

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : जब मैंने माननीय प्रधानमंत्री का नाम पुकारा है तो आप इस पर भी विरोध कर रहे हैं।

(व्यवधान)

श्री सुदीप बंद्योपाध्याय : मैं अपनी पार्टी का दृष्टिकोण बताऊंगा। मैं अपनी पार्टी के दृष्टिकोण के बारे में केवल एक मिनट ही बोलूंगा...*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : कृपया अपने स्थान पर बैठिए।

(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : श्री बंद्योपाध्याय। कृपया अपने स्थान पर बैठिए।

श्री सुदीप बंद्योपाध्याय : मैं केवल एक मिनट लूंगा।

अध्यक्ष महोदय : श्री बंद्योपाध्याय, कृपया अपने स्थान पर बैठिए।

श्री सुदीप बंद्योपाध्याय : महोदय, जो बात हम स्पष्ट रूप से कहते हैं, वह यह है। हम ऐसे किसी वक्तव्य का विरोध करते हैं जो भारत के लोगों के मन में भ्रांति पैदा करता है। हमें पूर्ण विश्वास है कि राष्ट्रीय लोकतांत्रिक गठबंधन ने सरकार का नेतृत्व करने के लिए कुछ निर्णय लिए हैं...*(व्यवधान)*

श्री राजेश पायलट : यह उनका अपना कार्यक्रम है *(व्यवधान)* वे सदन में आकर अपनी कार्यसूची कार्यान्वित कर रहे हैं....*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : श्री बंद्योपाध्याय, कृपया अपने स्थान पर बैठ जाइए।

श्री सुदीप बंद्योपाध्याय : हम राष्ट्रीय लोकतांत्रिक गठबंधन के भागीदार हैं। राष्ट्रीय लोकतांत्रिक गठबंधन ने कुछ सकारात्मक वचनबद्धताएं की हैं, कि वे ऐसे मुद्दे नही उठाएंगे जो लोगों के मन में भ्रांति पैदा करते हैं। उन्हें किसी मुख्य मंत्री के बारे में किसी वक्तव्य से बचना चाहिए और हम अपनी पार्टी की ओर से माननीय प्रधानमंत्री से यह सुनिश्चित कराने का अनुरोध करेंगे कि इस प्रकार के वक्तव्य नहीं होने चाहिए जो अनावश्यक भ्रांति पैदा करते हैं। और जिनके परिणाम स्वरूप अनिश्चितता पैदा होती है।

अध्यक्ष महादेय : अब कृपया माननीय प्रधानमंत्री को बोलने दीजिए।

...(व्यवधान)

श्री प्रियरंजन दासमुंशी : जनता दल को अपनी स्थिति स्पष्ट करनी चाहिए।...*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : अब कृपया माननीय प्रधान मंत्री को बोलने दीजिए।

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : कृपया अपने स्थान पर बैठ जाइए। कृपया व्यवस्था बनाए रखिए।

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : श्री आठवले, कृपया अपने स्थान पर बैठ जाइए।

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : कृपया, अपना स्थान ग्रहण करें। यह सब क्या हो रहा है।

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : कृपया, अपना स्थान ग्रहण करें।

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : कृपया अपना स्थान ग्रहण करें।

[हिन्दी]

प्रधान मंत्री (श्री अटल बिहारी वाजपेयी) : अध्यक्ष महोदय, कुछ मित्रों ने.... *(व्यवधान)* अध्यक्ष महोदय, आज जो मामला उठाया गया है, वह समाचार पत्रों में जो कुछ प्रकाशित हुआ है, उसके आधार पर उठाया गया है, इससे कोई इनकार नहीं कर सकता। मैंने भी समाचार पत्रों में पढ़ा और मैंने जानने की कोशिश की कि वहां क्या कहा गया था। मैं पता लगा रहा हूं, पूरी रिपोर्ट मुझे मिलेगी। कभी-कभी बातें जो कही जाती हैं उसी रूप में प्रकाशित हों, यह जरूरी नहीं है। मैं किसी को दोष नहीं दे रहा हूं।...*(व्यवधान)*

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : यह सब क्या है? कृपया अपना स्थान ग्रहण करें। यह सब क्या है?

श्री एस. जयपाल रेड्डी (मिरयालगुडा) : महोदय, क्या मैं हस्तक्षेप कर सकता हूं।

[हिन्दी]

श्री मनसूर अली खां (सहारनपुर) : आप यह बात कह रहे हैं और यहां मैम्बर्स कुछ और कहते हैं। इससे ज्यादा कंट्राडिक्शन क्या होगा।...*(व्यवधान)*

श्री राजेश पायलट : यह गलत बात है।...*(व्यवधान)*

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : अध्यक्ष महोदय, हमारा कोई गुप्त एजेंडा नही हैं.....*(व्यवधान)* हम जिस एजेंडे के आधार पर चुनाव लड़े थे, मिलकर लड़े थे, मतदान से पहले लड़े थे और उसी के आधार पर हम जनता का समर्थन प्राप्त करके आये हैं, उसी के आधार पर हम विश्वास लेकर आये हैं। उस एजेंडे में यह बात बिल्कुल साफ है कि तीन विवादास्पद मुद्दों का उस एजेंडें में कोई उल्लेख नहीं है, कोई स्थान नहीं है...*(व्यवधान)* अध्यक्ष महोदय, 1998 और 1999 में फर्क यही है...*(व्यवधान)*

[अनुवाद]

श्री माधवराव सिंधिया : यह भाजपा की कार्यसूची में है।.. .*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : श्री दासमुंशी, कृपया बैठ जाइए।

(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : इन्हें अपनी बात पूरी करने दीजिए। श्री जयपाल रेड्डी, आप सभा के वरिष्ठ सदस्य हैं।

...(व्यवधान)

[हिन्दी]

श्री माधवराव सिंधिया : अध्यक्ष महोदय, उमा भारती जी ने भी कहा है, जो केन्द्रीय मंत्रिमंडल की सदस्य हैं। *...(व्यवधान)*

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : पहले उन्हें अपनी बात पूरी करने दीजिए।

...(व्यवधान)

[हिन्दी]

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : अध्यक्ष महोदय, जब हमने चुनाव लड़ने का फैसला किया तब हमने एक नया मैनिफैस्टो बनाया। वह प्रकाशित मैनीफैस्टो है। उसे लेकर हम लोगों के पास गए थे। उसमें इन तीन मुद्दों का कोई उल्लेख नहीं है और वही हमारा कार्यक्रम है। हम उसी को लेकर चल रहे हैं, उसे लेकर आगे बढ़ रहे हैं। इसके बारे में किसी के मन में किसी प्रकार का भ्रम नहीं होना चाहिए। *...(व्यवधान)*

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : श्री मणिशंकर अय्यर, कृपया बैठ जाइए।

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : श्री रामदास आठवले, जब प्रधान मंत्री बोल रहे हों तो आपको व्यवधान नहीं डालना चाहिए। यह गलत है।

...(व्यवधान)

[हिन्दी]

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : अध्यक्ष महोदय, ये जो भी निर्वाचित होकर आए हैं, वे नेशनल एजेंडा के आधार पर निर्वाचित होकर आए हैं। व्यक्तिगत राय अलग–अलग हो सकती है, लेकिन यह सरकार और एन डी ए *...(व्यवधान)*

[अनुवाद]

संसदीय कार्यमंत्री तथा सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री (श्री प्रमोद महाजन) : महोदय, हमें कड़ी आपत्ति है।...*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : श्री बसुदेव आचार्य, कृपया बैठ जाइए।

(व्यवधान)

[हिन्दी]

श्री बसुदेव आचार्य (बांकुरा) : चीफ मिनिस्टर का स्टेटमेंट है यह व्यक्तिगत राय कैसे हो सकती है...*(व्यवधान)*।

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : कृपया बैठ जाइए।

(व्यवधान)

[हिन्दी]

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : मैं पता लगवा रहा हूं।..... *(व्यवधान)*

श्री मोहन रावले (मुम्बई दक्षिण-मध्य) : अध्यक्ष महोदय, ये प्रधान मंत्री जी को भी बोलने नहीं दे रहे हैं। ऐसा कैसे चलेगा। इन्होंने महाराष्ट्र में दंगे कराने शुरू कर दिए हैं।..*(व्यवधान)*

[अनुवाद]

श्री माधवराव सिंधिया : कुमारी उमा भारती मंत्रिमंडल की सदस्य हैं।...*(व्यवधान)*

[हिन्दी]

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : अध्यक्ष महोदय, हम अपने इरादों में कितने इरादों में कितने पक्के हैं...*(व्यवधान)*

[अनुवाद]

अध्यक्ष महादेय : यह टोका–टाकी गलत है। कृपया, अपना स्थान ग्रहण करें। यह ठीक नहीं है। कृपया बैठ जाइए।

...(व्यवधान)

[हिन्दी]

संसदीय कार्य मंत्री तथा सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री (श्री प्रमोद महाजन) : पता है, तो फिर पूछ क्यों रहे हैं। ...*(व्यवधान)*

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : श्री मणि शंकर अय्यर, यह सब क्या है?

...(व्यवधान)

[हिन्दी]

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : अध्यक्ष महोदय, 1998 के चुनावों में हमने अपना अलग घोषणापत्र भी प्रकाशित किया था। उसमें इसका उल्लेख था, लेकिन इस बार का जो मैनीफैस्टो है, उसमें इसका उल्लेख नहीं है। हमारा कोई अलग घोषणापत्र नहीं है और हम एक सम्मिलित घोषणापत्र के आधार पर लड़े हैं, उसी से पूरी पार्टी बनी है और उसी से सारी सरकार चल रही है। जो हम कह रहे हैं उस पर आप भरोसा नहीं कर रहे हैं, यह ताज्जुब की बात है। 6 दिसम्बर बीत गई, अयोध्या में शान्ति रही, सारे देश में शान्ति रही, उसी से आप परेशान हैं।...*(व्यवधान)*

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : उनकी बात अभी पूरी नहीं हुई है।

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : उनकी बात अभी पूरी नहीं हुई है। श्री मणिशंकर अय्यर, कृपया बैठ जाइए।

[हिन्दी]

श्री श्याम बिहारी मिश्र : अध्यक्ष महोदय, यदि ये प्रधान मंत्री जी को बोलने नहीं देंगे और इसी प्रकार से बीच में टोकेंगे, तो फिर हम भी इन्हें बोलने नहीं देंगे।...*(व्यवधान)*

श्री शीशराम सिंह रवि (बिजनौर) : अध्यक्ष महोदय, जब तक प्रधान मंत्री जी बोलें, तब तक इनमें से कोई भी न बोले।... *(व्यवधान)*

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : केवल हम कह नहीं रहे हैं, उस पर आचरण भी कर रहे हैं। ...*(व्यवधान)* काशी में जो कोई भी कदम उठाना चाहते थे, उन्हें रोका गया, गिरफ्तार किया गया। ...*(व्यवधान)* अयोध्या में भी हमने किसी तरह की गड़बड़ नहीं होने दी। यह हमारा आचरण बोलेगा कि आपके मन में जो भ्रम है, उसके आधार पर आप बोलेंगे।...*(व्यवधान)*

श्री प्रियरंजन दासमुंशी : आपके मंत्री भी बोलें हैं...*(व्यवधान)* आपके मंत्रिमंडल के जो सदस्य हैं।...*(व्यवधान)*

श्री माधव राव सिंधिया : काशी, मथुरा के बारे में आपके मैम्बर बोले हैं।...*(व्यवधान)* जो स्लोगन उठाये गये ...*(व्यवधान)* जो नारे दिये गये।....*(व्यवधान)*

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : टीका–टिप्पणी बंद करिए।

...(व्यवधान)

[हिन्दी]

श्री माधवराव सिंधिया : इनके मुख्यमंत्री शामिल हुए।... *(व्यवधान)* उन्होंने कहा कि काशी मथुरा हम लेंगे। ...*(व्यवधान)*

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : यह एक मुख्यमंत्री का वक्तव्य है। इस पर यहां चर्चा कैसे हो सकती है?

...(व्यवधान)

[हिन्दी]

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : उन्होंने क्या कहा, मैं पता लगा रहा हूं। आप थोड़ा धैर्य रखिये।...*(व्यवधान)*

श्री बसुदेव आचार्य : आपको पता लगाने में कितना समय लगेगा...*(व्यवधान)*

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : हम जिस घोषणा पत्र के आधार पर चुनाव लड़े थे, जिस के आधार पर हम जीते हैं, वहीं हमारे लिए अंतिम है। अगर कोई इधर–उधर की बात कहता है तो वह गलत कहता है। उसको नहीं कहना चाहिए और उसको भी उसे गंभीरता से नहीं लेना चाहिए।...*(व्यवधान)*